Baba’s Praise

21/7/2015

- शिव भगवानुवाच। रूद्र भगवानुवाच भी कहा जा सकता है क्योंकि शिव माला नहीं गाई जाती है। शिव और रूद्र में कोई फर्क नहीं है।
- यह कितना वन्डर है जो सर्व का सद्गति दाता परमपिता परमात्मा आकर पढ़ाते हैं।
- मूल बात है ही गीता के भगवान की। इस पर जीत पाई तो बस।
- बाबा बिजनेसमैन भी तो है ना। तुमसे कखपन पाई पैसे लेकर एक्सचेंज में क्या देता हूँ! इसलिए गाया जाता है रहमदिल। कौड़ी से हीरे जैसा बनाने वाला, मनुष्य को देवता बनाने वाला। बलिहारी एक बाप की है। बाप न होता, तो तुम्हारी क्या महिमा होती।

- बाबा है अविनाशी सर्जन, आत्माओं को आकर पढ़ाते हैं। वही अपवित्र बनी है। यह तो बहुत इजी है।
- बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको हम याद नहीं कर सकते हैं!